शान्ति प्राप्त करना है महर्षि पतंजलि ने 'योग सूत्र' मै परामर्श दिया है कि किसी सुखी वैभव सम्पन्न सदाचारी एवं पुण्यवान व्यक्ति के प्रति ईष्या नहीं होनी चाहिये। बल्कि प्रसन्नता पूर्वक उसे साधुवाद देना चाहिए। स्वयं प्रेरणा से आत्मोन्नति का प्रयास करना चाहिए।

बच्चे को शिक्षा देना तो समाज के अपने ही हित में है। जन्म से तो मानव पशुवत् पैदा होता है। शिक्षा और संस्कार से तो वह समाज की अभिन्न घटक बनता है। जो काम समाज के अपने हित में हो, उसके लिए शुल्क लिया जाए यह तो उलटी बात है। कल्पना करें कि कल शिक्षा शुल्क का बहिष्कार करने अथवा उसे देने में असमर्थ होने के कारण बच्चे पढ़ना बंद कर दें। क्या समाज इस स्थिति को सहन करेगा? पेड़ लगाने और सींचने के लिए हम पेड़ से पैसा नहीं लेते। हम तो अपनी ओर से पूंजी लगाते हैं और जानते हैं कि पेड़ के फलने पर हमें फल मिलेंगे ही। शिक्षा भी इसी प्रकार का इंवेस्टमेंट है। व्यक्ति शिक्षित होने पर समाज के लिए काम करेगा ही, किन्तु जो व्यवस्था बचपन से ही हमें व्यक्तिवादी बनाती हो, उसमें समाज की अवहेलना करने वाले निकलें तो आश्चर्य ही क्या, भारत में सन् 1947 पूर्व सभी आश्रम में होती थी। केवल भिक्षा मांगने के लिए ब्रह्मचारी समाज में जाता था। कोई भी गृहस्थ ब्रह्मचारी को खाली नहीं लौटाता था। अर्थात् समाज द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी।04

समाचार पत्र तो जन–जीवन का प्रतिबिम्ब मात्र है। समाज की सब बुराइयां समाचार पत्रों में शीघ्र ही प्रकट होती है। आज हम राजनीतिक को तथा भौतिकवाद को बहुत महत्व देते हैं। इन बातों ने हमारी सब शक्तियों को ग्रस लिया है। अर्थात् इसी का बढ़ा–चढ़ा प्रतिबिम्ब हम समाचार पत्रों में पाते हैं। हमारे समाचार पत्र खलबली मचाने तथा पाप एवं अपराध–कथाओं की जुगाली करते रहने, में वर्ग का अनुभव करते हैं। इस वृत्ति में आमूलाग्र परिवर्तन आवश्यक है। राजनैतिक और आर्थिक पहलुओं को तथा उन क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अत्यधिक महत्व देने एवं उन्हें आदर्श पुरूषों के रूप में चित्रित करने की अपेक्षा यदि परमेश्वर की तथाा मानवता की सेवा करने वाले व्यक्तियों को अधिक महत्व देते हैं, तो पत्रकारों द्वारा देश की महान सेवा होगी। इन ईश्वर–भक्तों के पास या मानवता के सेवकों के पास कदाचित् यमक–दमक अथक क्रियाशील रहते हैं। उनका अनुकरण होना चाहिये। उनका अनुयायित्व बढ़ना चाहिय। मुझे ऐसा लगता है कि मासिक और अन्य नियतकालिक पत्रिकाएं इस कार्य को भली भांति कर सकेंगी। दैनिक समाचार पत्रों के लिये यह सम्भव नहीं दिखता।05 अन्ततः वर्तमान अग्नि–परीक्षा में भारी मूल्य चुकाकर प्राप्त हुआ सबक हमें विस्मृत नहीं कर देना चाहिए। प्रथमतः, राष्ट्रीय एकता व उत्साह का ज्वार अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थों के कारण बिखरने नहीं देना चाहिए; क्योंकि राष्ट्रीय भाव से जागृत एवं एकरस समाज ही प्रखर शक्तिशाली एवं वैभव सम्पन्न बन सकता है। द्वितीयतः, कठोर परिश्रम का वातावरण बनाये रखना आवश्यक है। प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट उत्पादन में भारी वृद्धि होनी चाहिए, ताकि देश पूर्ण आत्म–निर्भर बन सके। अतः, हमारे समक्ष सर्वोच्च प्राथमिकता का कार्य आत्मबलिदानी, अनुशासित पौरूषवान् एवं प्रखर राष्ट्र–भाव से ओतप्रोत व्यक्तियों का निर्माण करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माधव राव सदाशिव राव गोलवलकरः विचार नवनीत ज्ञान गंगा प्रकाशन भारतीय भवन बी0 15 न्यू कॉलोनी जयपुर राजस्थान पृ0 सं0 372
2. महेश चन्द्र शर्मा दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाड्. मय खण्ड 11 प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली – 110002 पृ0 सं0 199
3. महेश चन्द्र शर्मा दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाड्. मय खण्ड 11 प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली – 110002 पृ0 सं0 245
4. महेश चन्द्र शर्मा दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाड्. मय खण्ड 12 प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली – 110002 पृ0 सं0 90
5. माधव राव सदाशिव राव गोलवलकरः विचार नवनीत ज्ञान गंगा प्रकाशन भारतीय भवन बी0 15 न्यू कॉलोनी जयपुर राजस्थान पृ0 सं0 379

*****

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 97-99
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

पूरक पोषाहार एवं शारीरिक पोषण सेवाओं में आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

नाजिया बानो

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, श्री गुरू नानक डिग्री कॉलेज, रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर)

Received- 19.04.2019, Revised- 23.04. 2019, Accepted - 27.04.2019 E-mail: nazi071992777@gmail.com

सारांश : *प्रारम्भिक बाल्यावस्था मानव जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है क्योंकि यह वह समय होता है जिसमें बच्चे का विकास तीव्र गति से होता है इस अवस्था में की गई देखभाल ही यह निर्धारित करती है कि बच्चे का भविष्य कैसा होगा। भारत की जनसंख्या का एक तिहाई भाग बालकों का है और उनकी सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक उन्नति में ही भारत की समृद्धि निहित है। उचित पोषण एवं स्वास्थ्य मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है।*

वर्तमान में भारत विश्व के विकासशील देशों में आता है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा जनसंख्या बाहुल्य देश है और इस जनसंख्या की अधिकता के कारण कुपोषण एक गम्भीर समस्या के रूप में चुनौती दे रहा है। शिशु कुपोषण में वृद्धि होती जा रही है। कुपोषण के कारण बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिसके कारण वह बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। निर्धन क्षेत्रों में आज भी नन्हे बच्चे मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बच्चों की रूग्णता एवं मृत्युदर में कमी लाने हेतु समेकित बाल विकास योजना के अन्तर्गत आँगनबाड़ी केन्द्रों को माध्यम बनाया गया है, जिसमें आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों की भूमिका अत्यन्त महत्व रखती है।

कुंजी शब्द – आँगनबाड़ी, समेकित बाल विकास, कुपोषण, रूगणता, मृत्युदर, निर्धन, प्रतिरोधक।

बाल्यकाल से ही बच्चों की शैक्षणिक, सामाजिक व मनाावैज्ञानिकता का सर्वांगीण विकास किया जा सके इसको दृष्टिगत रखते हुये भारत सरकार द्वारा (आई.सी.डी. एस.) समन्वित बाल विकास योजना सम्बन्धित राष्ट्रीय कार्यक्रम का संचालन 2 अक्टूबर 1975 से किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं निर्धन स्थानों के नवजात शिशु एवं उनको जन्म देने वाली माताओं के स्वास्थ्य व आहार को उचित रूप से करना है। बाल विकास एवं पोषण की आवश्यकता के दृष्टिगत आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों को यह प्राथमिकता दी गई कि वह आँगनबाड़ी केन्द्रों के माध यम से बाल विकास मे पूरक पोषाहार एवं शारीरिक देखभाल सम्बन्धी बाल विकास कार्यों में अपना योगदान दे रही हैं। समन्वित बाल विकास योजना 6 वर्ष की आयु के बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा स्तनपान कराने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण एवं शौक्षणिक सेवाओं की एकीकृत लाभ प्रदान करने की योजना है।

समन्वित बाल विकास योाजना के उद्देश्य : बच्चों को आँगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से पूरक भोजन उपलब्ध कराया जाता है जिसमें 500 कैलोरी की ऊर्जा और 12–15 ग्राम प्रोटीन सम्मिलित होता है। इसके अलावा स्तनपान कराने वाली और गर्भवती महिलाओं के भोजन में 600 कैलोरी की ऊर्जा और 18–20 ग्राम प्रोटीन उपलब्ध कराया जाता है। 0–6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने पर ध्यान दिया जाता है। समन्वित बाल विकास कार्यक्रम का उद्देश्य एक ऐसी प्रणाली विकसित करना है, जिससे बच्चों के मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और समाजिक विकास को बढ़ावा मिल सके तथा बच्चों की मृत्यु दर, अस्वस्थता दर, कुपोषण दर और स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या को कम किया जा सके।

उचित पोषण अस्तित्व स्वास्थ्य और विकास की आधारशिला है। बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ विभिन्न बीमारियों ने भी जन्म लिया है। पोषण बच्चों के शारीरिक विकास एवं उनकी मानसिक वृद्धि में सहायक होता है और विभिन्न बीमारियों से लड़ने हेतु रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।

तालिका सं0 1

क्रम सं0	पोषण सुरक्षा के लिए नीतिगत व्यवस्थायें
1.	राष्ट्रीय बाल नीति 1974
2.	एकीकृत बाल विकास परियोजना आई.सी.डी.एस. 1975
3.	राष्ट्रीय पोषण नीति – 1933
4.	नेशनल प्लान ऑफ एक्शन फॉर न्यूट्रीशन – 2005
5.	एनीमिया नियन्त्रण योजना (आइरन टेबलेट)
6.	मध्यान्ह भोजन
7.	9 माह से तीन साल के बच्चों को विटामिन 'ए' खुराक

बच्चों का सर्वांगीण विकास ही बाल विकास है। सन्तुलित एवं पौष्टिक भोजन (प्रोटीन, वसा, खनिज, लवण, विटामिन्स) शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहायक होता है।

पद्धतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य : प्रस्तुत शोध पत्र 'पूरक पोषाहार एवं शारीरिक पोषण सेवाओं में आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों की भूमिकाओं पर आधारित है, जो रामनगर विकासखण्ड की आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों की भूमिकाओं का अध्ययन

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

करता है। रामनगर उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जिले का विकासखण्ड है। रामनगर 29.40 उ0 79.100 पू0 अक्षांश पर स्थित है। विकासखण्ड रामनगर की 50 आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों का चयन दैव निदर्शन की लॉटरी विधि द्वारा किया गया तथा प्राथमिक आंकड़ों के संग्रह हेतु अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में शोध पत्र, पत्रिकायें तथा समाचार पत्रों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. केन्द्रों में वृद्धि चार्ट उपलब्ध होने के सम्बन्ध में मनोवृत्ति।
2. उत्तरदाताओं द्वारा कुपोषित बच्चों के पोषण हेतु कार्यों का विवरण
3. उत्तरदाताओं द्वारा कुपोषित बच्चों के पोषण हेतु दिये गये आहार का विवरण
4. केन्द्रों में बच्चों को पुष्टाहार दिये जाने के सम्बन्ध में
5. उत्तरदाताओं द्वारा बच्चों की देखभाल के प्रकारों का विवरण

वृद्धि से आशय शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि से होता है। साधारणतया वृद्धि का अर्थ बच्चे के शरीर के विभिन्न अंगों का विकास से होता है। शिशु अवस्था से ही गलत आहार पद्धतियों बच्चों की वृद्धि को कम करती हैं तथा कुपोषण को जन्म देती है, जिससे बच्चे का शारीरिक विकास क्षीण होता है तथा उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास होता है।

तालिका सं0 2

केन्द्रों में बच्चों की वृद्धि चार्ट होने के सम्बन्ध में मनोवृत्ति

क्रम सं0	मनोवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	39	78%
2.	नहीं	11	22%
	कुल योग	**50**	**100%**

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं के केन्द्रों में ग्रोथ (वृद्धि चार्ट) उपलब्ध है, जिसमें वह सामान्य वज़न के बच्चे, अत्यधिक वजन वाले बच्चे तथा कुपोषित बच्चों की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं तथा साथ ही 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के केन्द्रों में वृद्धि चार्ट उपलब्ध नहीं है। अधिकांश उत्तरदाताओं के केन्द्रों में वृद्धि चार्ट उपलब्ध है।

तालिका सं0 3

उत्तरदाताओं के द्वारा कुपोषित बच्चों के पोषण हेतु कार्यों का विवरण

क्रम सं0	कार्य	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	उचित देखाभाल	20	40%
2.	पोषण हेतु ब्यौरा भेजना	22	44%
3.	कुपोषित बच्चे नहीं हैं	08	16%
	कुल योग	**50**	**100%**

तालिका संख्या 3 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाता अपने केन्द्रों में कुपोषित बच्चों की अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक व उचित देखभाल करते हैं तथा 44 प्रतिशत उत्तरदाता कुपोषित बच्चों की स्थिति एवं लक्षणों को ज्ञात कर बाल विकास कार्यक्रम के सुपरवाइजर को ब्यौरा भेजती हैं। जिससे कुपोषित बच्चों को उचित रूप से पोषण सामग्री प्राप्त हो सके तथा शेष 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं के केन्द्रों में कुपोषित बच्चे नहीं हैं जो एक प्रगतिसूचक स्थिति को दर्शाता है।

तालिका सं0 4

केन्द्रों में बच्चों को पुष्टाहार दिये जाने के सम्बन्ध में

क्रम सं0	खाद्य सामग्री प्रतिदिन (पुष्टाहार)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	20 ग्राम दाल चावल एवं 30 ग्राम उबला चना	27	54%
2.	80 ग्राम दलिया एवं खिचड़ी	23	46%
	कुल योग	**50**	**100%**

तालिका संख्या 4 से यह स्पष्ट होता है कि 27 प्रतिशत उत्तरदाता केन्द्रों में सामान्य पुष्टाहार सामग्री के अन्तर्गत बच्चों को दाल चावल एवं उबला चना खिलाते हैं तथा 46 प्रतिशत उत्तरदाता बच्चों को दलिया एवं खिचड़ी खिलाते हैं। अधिकांश उत्तरदाता खाद्य सामग्री बच्चों को प्रतिदिन खिलाते हैं।

तालिका सं0 5

उत्तरदाताओं द्वारा बच्चों की देखभाल के प्रकारों का विवरण

क्रम सं0	देखभाल के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्नेहपूर्वक	21	42%
2.	क्रोधपूर्वक	04	8%
3.	सामान्यतः	25	50%
	कुल योग	**50**	**100%**

उक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा स्नेहपूर्वक बच्चों की देखभाल की जाती है तथा 8 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक तनाव के कारणवश क्रोधित होकर कार्य करती हैं तथा 50 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से अपने केन्द्रों में बच्चों की देखभाल करती हैं। अधिकांश उत्तरदाता केन्द्रों में बच्चों की भली–भांति देखभाल करती हैं।